# इकाई 13 विद्यार्थियों की व्यवहारगत समस्याएँ

**संरचना**


13.1 प्रस्तावना

13.2 उद्देश्य

13.3 व्यवहारगत समस्याओं की प्रकृति

- 13.3.1 बच्चों की समस्याएँ
- 13.3.2 किशोरों की समस्याएँ

13.4 व्यवहारगत समस्याओं की पहचान

- 13.4.1 व्यवहारगत समस्याओं का वर्गीकरण
- 13.4.2 व्यवहारगत समस्याओं के प्रकार

13.5 व्यवहारगत समस्याओं के कारण

- 13.5.1 वैयक्तिक और सामाजिक आवश्यकताएँ
- 13.5.2 परिपक्वता के प्रभाव
- 13.5.3 अध्यापक और कक्षा की परिस्थितियाँ
- 13.5.4 सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ
- 13.5.5 घर की परिस्थितियाँ
- 13.5.6 कदाचनिक भूलें

13.6 व्यवहारगत समस्याओं से निपटने संबंधी सुझाव

- 13.6.1 क्या दंड व्यवहार को सुधारता है?
- 13.6.2 व्यवहार-प्रबंधन की क्रियाविधियाँ/तकनीकें
- 13.6.3 व्यवहार-परिष्करण की तकनीक

13.7 उपचारात्मक उपाय

- 13.7.1 अध्यापकों की भूमिका
- 13.7.2 माता-पिता/अभिभावकों की भूमिका
- 13.7.3 उपबोधक/मनोवैज्ञानिक की भूमिका

13.8 सारांश

13.9 अभ्यास कार्य


## 13.1 प्रस्तावना

अधिकांश बच्चों को कभी-न-कभी व्यवहारगत समस्याएँ होती हैं। व्यवहारगत समस्याएँ बालक की अंतर्दशाओं या प्रायः ध्यान में न आने वाले बाह्य दबावों या दूसरों द्वारा नहीं समझे जाने वाली बातों से उत्पन्न होती हैं। व्यवहारगत समस्याएँ अन्यमनस्कता या तटस्थता या पलायन से लेकर उत्तेजित होने, विरोध, शत्रुता प्रकट करने एवं अत्यंत आक्रामक रुख अपना लेने के रूप में प्रकट होती हैं। कक्षा में विद्यार्थी व्यवहारगत समस्याओं का सामना अपने ढंग से करने का प्रयास करता है, जो कभी-कभी दूसरों के लिए दुःखदायी हो जाता है।

उपबोधन के बारे में समझना (इकाई 2), कक्षा में निर्देशन (इकाई 3), निर्देशन में अध्यापक व कैरियर मास्टर की भूमिका (इकाई 4) और निर्देशन कार्यक्रम (इकाई 6) संबंधी इकाइयों में उपबोधन की समझ, उपबोधन सेवाओं और कक्षा में शिक्षक की भूमिका से संबंधित मुद्दों पर विस्तृत रूप से विचार किया गया है।

इस इकाई में हम ऐसे विद्यार्थियों द्वारा अनुभव की जाने वाली कठिनाइयों को और अधिक समझाने का प्रयास करेंगे जो प्रायः विभिन्न कारणों से कई समस्याओं को जन्म देती है, या विद्यार्थियों की जो आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो पाती। व्यवहारगत समस्याओं के समाधान के बारे में सुझावों और प्रविधियों की भी चर्चा की जाएगी।

## 13.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप इस योग्य हो जाएंगे कि :

- व्यवहारगत समस्याओं को पहचान सकेंगे;
- बच्चों और किशोरों की विभिन्न प्रकार की व्यवहारगत समस्याओं में अंतर कर सकेंगे;
- व्यवहारगत समस्याओं के कारणों की व्याख्या कर सकेंगे;
- व्यवहारगत समस्याओं वाले विद्यार्थियों से निपटने के लिए सुझाव दे सकेंगे; और
- विद्यार्थियों की व्यवहारगत समस्याओं के प्रबंधन में माता-पिता/अभिभावकों और अध्यापकों की भूमिका का वर्णन कर सकेंगे।

## 13.3 व्यवहारगत समस्याओं की प्रकृति

जिस प्रकार मानसिक रूप से मंद बालक धीमेपन से सीखते हैं, उसी प्रकार व्यवहारगत समस्याओं वाले विद्यार्थी अपने विकास और अधिगम (सीखने) में गंभीर बाधा महसूस कर सकते हैं। व्यवहारगत समस्याएँ बाह्य प्रभावों द्वारा उत्पन्न होती है; जो प्रायः न तो ध्यान में आती हैं और न ही दूसरों के द्वारा समझी जा सकती हैं। प्रायः भावात्मक और मनोवैज्ञानिक कारण प्रत्यक्ष व आसानी से तो दिखाई नहीं देते, किंतु अक्सर उन्हें तनाव कम करने वाले अवसाद, शत्रुता, प्रत्याहार या दिवा-स्वप्न जैसे नामों से पहचाना जाता है। ऐसे बालकों का यौन शोषण करना अपेक्षाकृत आसान होता है या उनकी संवेगात्मक या शारीरिक दृष्टि से उत्पीड़न किया जा सकता है। ऐसे अधिकांश बच्चे प्रायः कक्षाओं में नियमित रूप से जाते तो जरूर हैं किंतु उनकी समस्याओं को कोई समझता नहीं। ऐसी स्थिति में वे खुद ही अपनी समस्याओं का सामना करने का प्रयास करते हैं।

अध्यापकों व माता-पिता को अपने बच्चों की व्यवहारगत समस्याओं से निपटने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसी समस्याएँ प्रायः बच्चों की अधिगम (सीखने) प्रक्रिया में बाधा डालती है और उनके शैक्षिक कार्यक्रम से मेल नहीं खाती।

व्यवहारगत समस्याओं के कारण ऐसे बच्चे अपने सहपाठियों, शिक्षकों, भाई-बहनों, यहाँ तक कि माता-पिता द्वारा कभी-कभार ही पसंद किए जाते हैं। और भी बुरा यह है कि वे स्वयं को भी पसंद नहीं करते। आइए, पहले हम यह समझने का प्रयास करें कि व्यवहारगत समस्या होती क्या हैं?

एक अध्यापक के लिए अपने विद्यार्थियों की प्रत्यक्ष दिखाई पड़ने वाली व्यवहारगत समस्याओं के कारणों को समझना जरूरी है, अन्यथा वह ऐसे विद्यार्थियों के साथ ऐसे तरीके से व्यवहार कर सकता है जिसके परिणाम गंभीर हो सकते हैं। व्यवहारगत समस्याओं से ग्रस्त विद्यार्थी अपने अध्यापकों के लिए प्रायः अत्यधिक कुंठित करने वाली (Frustrating) समस्याएं या लाभदायक (rewarding) चुनौतियाँ खड़ी कर देते हैं।

व्यवहारगत समस्याओं को प्रदर्शित करने वाले व्यवहार पूर्णतः पलायन से लेकर आक्रामक रुख अपनाने तक फैले हो सकते हैं। ऐसे विद्यार्थियों की यदि पहचान न की जाए और विद्यालय काल में उनकी सहायता न की जाए तो उन्हें समाज के साथ कार्य करने में निरंतर कठिनाइयाँ आएँगी और धीर-धीरे उनकी समस्याएँ बाद के जीवन में अधिक गंभीर हो जाएँगी।

विद्यार्थियों की ऐसी कई शारीरिक, मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक आवश्यकताएँ हैं जो उनकी वृद्धि एवं विकास के लिए आवश्यक है। आइए, विद्यार्थियों की इन आवश्यकताओं का पुनः स्मरण करें।

**शारीरिक आवश्यकताएँ**

- उचित भोजन व कपड़े
- दर्द व बीमारी से बचाव
- खेलने के लिए समय

**मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ**

- व्यक्ति एक के रूप में स्वीकरण
- संवेगात्मक संतुष्टि
- सतत् पुनः विश्वास
- स्नेह
- भावात्मक अनुक्रियाओं को नियंत्रित करने में सहायता
- उसकी अपनी लैंगिक स्वीकृति में सहायता
- दूसरे व्यक्तियों के साथ कैसे व्यवहार किया जाए - इसे सीखने में सहायता।

**शैक्षिक आवश्यकताएँ**

- ऐसी शिक्षा जो डर पर आधारित न हो
- अध्ययन में सहायता
- विद्यालय में समझपूर्ण और गरमजोशी भरा वातावरण
- उपलब्धि की भावना
- जीवन की चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए शिक्षा
- कुछ-न-कुछ नया सीखने के लिए प्रोत्साहन

ये सभी आवश्यकताएँ परस्पर संबंधित हैं। ये सभी आवश्यकताएँ एक-दूसरी को प्रभावित करती हैं और बढ़ रहे बालक पर अपनी छाप छोड़ती हैं।

अब्राहम मास्लोव (1970) ने मानवीय अभिप्रेरणा को सोपानक्रमिक आवश्यकताओं के रूप में देखा है। सर्वाधिक बुनियादी आवश्यकता शरीर क्रियात्मक आवश्यकताएँ हैं और आत्मसिद्धि (self actualization) सर्वोच्च आवश्यकता है। बुनियादी आवश्यकताओं की संतुष्टि के बाद ही हम उच्चतर आवश्यकताओं की प्राप्ति के लिए कार्य कर सकते हैं।

## 13.3.1 बच्चों की समस्याएँ

बच्चों द्वारा अनुभव की जाने वाली कुछ समस्याएँ हैं – अत्यधिक शर्मीलापन, डरावनापन (fearfulness), आक्रामक व्यवहार, ध्यान आकर्षित करना, अति फुर्तीलापन, अत्यधिक निर्भरता, दिवास्वप्न देखना, पड़े रहना, धोखा देना और चोरी करना आदि।

इनमें से कई समस्याएँ अध्यापक / माता-पिता द्वारा 'पुरस्कार' का प्रयोग करके, जैसे : प्रशंसा, खिलाना और खिलौने का प्रयोग करके हल की जा सकती हैं। माता-पिता और अध्यापकों को इस बात के लिए कि वे ऐसी समस्याओं वाले बालकों को इन पुरस्कारों को प्राप्त करने के लिए

उपयुक्त व्यवहार में लगाने हेतु प्रोत्साहित करें प्रशिक्षित किया जा सकता है। किंतु ऐसी व्यवहारगत समस्याओं को जन्म देने वाली सामाजिक स्थितियों की उनकी समझ बहुत सीमित होती है और उनको यह समझने में कठिनाई हो सकती है कि उनका व्यवहार बच्चों के व्यवहार को कैसे प्रभावित करता है, या बच्चे मनमाना व्यवहार क्यों करते हैं?

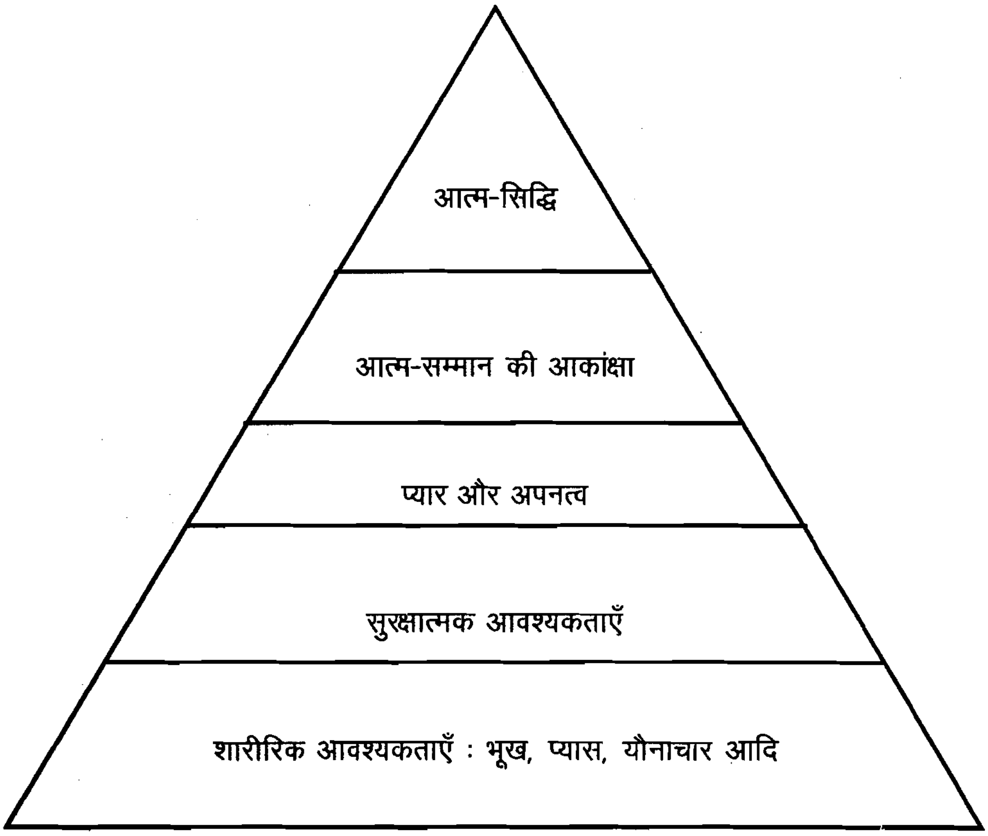


**मानवीय आवश्यकताएँ**

## 13.3.2 किशोरों की समस्याएँ

किशोरावस्था की मुख्य पहचान है : प्रायः स्वतंत्रता के लिए भरपूर प्रयास करना और वयस्क सत्ता से छुटकारा पाने हेतु बगावत करना। माता-पिता / अभिभावकों और विद्यालयीन अधिकारियों से खटपट, नशीले पदार्थों का सेवन, कर्तव्य-पलायन (truancy), चोरी और लैंगिक दुराचार (sexual misconduct) किशोरों की सामान्य समस्याएँ हैं। इसलिए यह आश्चर्यजनक नहीं माना जाना चाहिए यदि ऐसी समस्याओं वाले किशोर सामान्यतः वयस्कों (चिकित्सक सहित) को संदेह से देखते हों, विद्रोही, अवज्ञाकारी स्वभाव वाले हों और उपचार-प्रयत्नों का प्रतिरोध करते हों। ऐसे अनिच्छुक किशोर अपनी समस्याओं के लिए दूसरों को दोष दे सकते हैं और उनमें अपने व्यवहार को बदलने में अभिप्रेरणा की कमी पाई जाती है। किशोरों के लिए प्रायः सामूहिक उपचार विधियाँ काम में ली जाती हैं ताकि कम धमकाने वाला और अधिक आकर्षक वातावरण सृजित किया जा सके और व्यवहार परिवर्तन के लिए सहपाठियों-साथियों का सहयोग लेने का प्रयास किया जा सके। जो किशोर प्रारंभ से डरपोक, पलायनवादी, अवसाद युक्त और मानसिक रूप से भ्रमित होते हैं, उनकी प्रायः व्यक्तिगत चिकित्सा की जाती है।

**बोध प्रश्न**

**टिप्पणी :** क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

   1. व्यवहारगत समस्याएँ बालक की .................. परिस्थितियों से या ......................... से उत्पन्न होती हैं, जिसके प्रभाव दूसरों द्वारा प्रायः नहीं समझे जाते।

   2. व्यवहारगत समस्याओं की सीमा अत्यधिक ............................... से गहन ............................. तक होती है।

   3. व्यवहारगत समस्याओं वाले विद्यार्थी प्रायः शिक्षकों के लिए सर्वाधिक ..................................... समस्या और सर्वाधिक क्षमता युक्त ..................................... चुनौती प्रस्तुत करते हैं।

## 13.4 व्यवहारगत समस्याओं की पहचान

### 13.4.1 व्यवहारगत समस्याओं का वर्गीकरण

क्वेरी और उसके साथियों ने व्यवहारगत समस्याओं की सुप्रसिद्ध वर्गीकरण-प्रणाली का विकास किया है। सैकड़ों व्यवहार-विकृत बच्चों से संबंधित विस्तृत आँकड़े एकत्रित किए गए, जिनमें माता-पिता और अध्यापकों द्वारा व्यवहार-मूल्यांकन, जीवनवृत्त (जीवन इतिहास) और स्वयं बच्चों से प्रश्नावलियों के उत्तर सम्मिलित थे। सांख्यिकी विश्लेषण से पता लगा कि समस्याएँ समूहों या गुच्छों में पाई जाती हैं। जिन बच्चों ने किसी एक समूह विशेष के कुछ व्यवहार प्रदर्शन किए, उनमें उसी समूह की अन्य विशेषताएँ और व्यवहार प्रदर्शित करने की उच्च संभावना भी पाई गई।

| आचरण विकार | व्यक्तित्व विकार | अपरिपक्वता | सामाजीकृत अपचार |
|---|---|---|---|
| अवज्ञाकारी विघटनकारी, हवा में उड़ना, रोब झाड़ना, बद मिजाजी | सामाजिक प्रत्याहार, चिंता अवसाद और हीनता की भावना, अपराध, शर्मीलापन और विषाद | अल्प अवधान अवधि, अत्यधिक उदासीनता, दिवास्वप्न देखना, कम उम्र बाल सखा रखना, फूहड़पन | आवारापन या कर्तव्य पलायनता, दलबंदी, चोरी |

क्वेरी (1972,1975) ने व्यवहारगत समस्याओं को उपर्युक्त 4 समूहों में वर्गीकृत किया है।

### 13.4.2 व्यवहारगत समस्याओं के प्रकार

व्यवहारगत-समस्याओं को नीचे दिए गए प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है :

1) **कक्षा व्यवधान** : सहपाठी बालकों को चिढ़ाना या यातना देना, दूसरों के कार्य में हस्तक्षेप करना, जल्दी शोर मचाने लगना आदि।

2) **अधीरता** : काम में जल्दबाज़ी करना या लापरवाही बरतना, पुनरावृत्ति न करना या करना तो घास काटना। शारीरिक दृष्टि से अधिक चुस्ती या बेचैनी प्रकट करना।

3) **अनादर-अवज्ञा** : अध्यापक के प्रति अनादरपूर्ण शब्दों का प्रयोग करना, सौंपे गए कार्य का प्रतिरोध करना, किए जा रहे कार्य को छोटा समझना और कक्षा के नियमों को तोड़ना।

4) **उपलब्धि की चिंता** : परीक्षणों और प्राप्तांकों के बारे में परेशान होना, और सुधार तथा आलोचना की बात सुनकर तिलमिला जाना।

5) **बाह्य निर्भरता** : निर्देशन के लिए दूसरों का मुँह ताकना, सकेत न समझते हुए स्पष्ट निर्देशन चाहना और स्वयं निर्णय लेने में कठिनाई का अनुभव करना।

6) **असावधानी - प्रत्याहारीवृत्ति** : काम पर पूरा ध्यान न देना, भुलक्कड़पन, कक्षा में किए जाने वाले काम पर ध्यान न देना या किसी और काम में व्यस्त रहना।

7) **अप्रासंगिक अनुक्रियाशीलता** : अतिशयोक्तिपूर्ण कहानियाँ गढ़ना, अप्रासंगिक उत्तर देना, अध्यापक बोल रहा हो तब बाधा डालना तथा कक्षा-परिचर्चा के दौरान अप्रासंगिक टीका-टिप्पणियाँ करना।

8) **अध्यापक के साथ निकटता की आवश्यकता** : कक्षा से पूर्व और कक्षा के बाद अध्यापक के पास जाना, अध्यापक के लिए कुछ करने की इच्छा प्रकट करना, अध्यापक के साथ मित्रवत् व्यवहार करना तथा शारीरिक रूप से अध्यापक के समीप होना पसंद करना।

अन्य विद्धानों ने कुछ और प्रकार भी गिनाएँ हैं। वे हैं :

**चिंता - अवसाद** : लटका मुँह बनाए रहना या तनावपूर्ण चेहरा रखना, छोटे-से-छोटे बहाने पर आसानी से रोना-चिल्लाना, किसी से बात न करना, किसी काम में दिलचस्पी न लेना। परीक्षण या प्राप्तांकों की बात सुनते ही उद्विग्न हो जाना और सुधार और आलोचना का नाम सुनते ही तिलमिला जाना।

**गुमसुम और प्रत्याहारी** : कक्षा में एकाकी या गुमसुम (शांत) रहना, दोस्त नहीं बनाना और अधिकतर अलग-थलग रहना। बहुत स्वकेंद्रित रहना, स्वयं के विचारों में खोए रहना या चिंताग्रस्त रहना तथा हर बात में अरुचि प्रकट करना या उमंगहीन होना।

**आकामकता और हिंसा** : ऐसा व्यवहार करना जो किसी व्यक्ति को चोट पहुँचाने वाला या संपत्ति को नुकसान पहुँचाने वाला हो।

**ध्यान की कमी** : अधिक देर तक कार्य करने और निर्देशों का पालन करने में कठिनाई का अनुभव करना, आसानी से व्याकुल हो जाना है, अत्यधिक बैचेनी प्रकट करना या शांत बैठने में कठिनाई महसूस करना।

**भगोड़ापन** : अटपटे कारण बताकर या साधारण रोगों के बहाने प्रायः विद्यालय से अनुपस्थित रहना।

**शारीरिक चोट** : बार-बार और कई प्रकार की चोटें खाना, जिनका उचित समयपर उपचार न करवाना। यथा, दवा लेने में विलंब, पट्टी के निशान जैसे धब्बे, काटना और जलना आदि के घाव।

**बोध प्रश्न**

**टिप्पणी :** क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

2. निम्न कथन सहीं हैं या गलत - स्पष्ट करें।

i) बच्चों की व्यवहारगत समस्याएँ कक्षा-कार्य में बाधा पहुँचाती है। (सत्य/असत्य)

ii) विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियाँ और बुद्धि का विकास व्यवहारगत समस्याओं से प्रभावित नहीं होते हैं। (सत्य/असत्य)

iii) व्यवहारगत समस्याओं से ग्रस्त बालक भावात्मक तनावों / समस्याओं को अभिव्यक्त नहीं करते। (सत्य/असत्य)

iv) व्यवहारगत समस्याओं वाले बालकों के प्रायः मित्र नहीं होते। (सत्य/असत्य)

v) अध्यापक और माता-पिता ऐसे बालकों का अधिकतर बहिष्कार करते हैं। (सत्य/असत्य)

vi) व्यवहारगत समस्याओं वाले बालकों को बाद में यानी प्रौढ़ जीवन में अधिक कठिनाई भुगतनी पड़ती है। (सत्य/असत्य)

3. निम्न प्रश्नों का 4 या 5 पंक्तियों में उत्तर दें।

1. व्यवहार किस अवस्था में समस्या बन जाता है?

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

2. ऐसे बच्चे प्रायः उदास क्यों रहते हैं?

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

## 13.5 व्यवहारगत समस्याओं के कारण

किसी बालक-विशेष की व्यवहारगत समस्याओं का कारण कुछ योगदान देने वाले ऐसे कारकों का एक विचित्र संयोजन है, जिनकी हम आगे चर्चा करेंगे। इनके अतिरिक्त शायद कुछ दूसरे कारक भी हो सकते हैं जिनसे हम अभी तक परिचित नहीं है या जिनकी अनदेखी कर दी गई है।

### 13.5.1 वैयक्तिक और सामाजिक आवश्यकताएँ

बालक की अवधान, पहचान, सहमति और संबंधन की आवश्यकता उतनी ही वास्तविक और सम्मोहक है जितनी कि भोजन और पानी की आवश्यकता। अवधान / ध्यान से वंचित बालक किसी ऐसी क्रिया की ओर जा सकता है जो उसे लोक प्रसिद्धि दे।

बालक या किशोर नहीं जानता कि वह वास्तव में सामाजिक संतुष्टि कैसे प्राप्त करे। उदाहरण के लिए, दबंग, झूठ बोलने वाला, दिखावा करने वाला, जोकर, आदतन बाधा डालने वाला बालक शायद अपनी सामाजिक आवश्यकताओं की ही पूर्ति कर रहा है।

व्यवहार संबंधी समस्याग्रस्त बालक जब सुनने की बजाय अपनी बात कहता है, अपनी बारी का इंतजार करने की बजाय दूसरों को धकेलता हो तो उसे कोई भी अवज्ञाकारी, उपद्रवी,

असहयोगी व पलायनशील भगौड़े की संज्ञा देगा। वह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि उस बालक को सामाजिक आवश्यकताओं के अतिरिक्त स्व-आदर की परवाह होती है तथा यह महसूस करता है कि वह स्वतंत्र, निराश्रित तथा महत्वपूर्ण है।

वे बालक जो मानसिक योग्यता में विशेष रूप से औसत से ऊँचे या नीचे होते हैं, वे यह मानकर चलते हैं कि इससे उन्हें अपनी सामाजिक और व्यक्तिगत आवश्यकताओं को संतुष्ट करने में मदद मिलती है। वे यह सोचते हैं कि यदि ऐसा न होता तो उनकी इच्छाएँ अन्यथा पूरी नहीं हो पातीं।

### 13.5.2 परिपक्वता के प्रभाव

एक व्यक्ति की वास्तविक आयु या मानसिक आयु कुछ भी क्यों न हो, एक औसत व्यक्ति, जो उससे कुछ वर्ष कनिष्ठ है, की तुलना में वह स्व-नियंत्रण या मानवीय संबंधों में अधिक परिपक्व नहीं हो सकता। व्यवहारगत समस्याएँ, जैसे : बदमिजाजी, नकारवृत्ति, ऊधमी पता तथा ध्यान आकर्षित करने की युक्तियाँ अपरिपक्वता की परिचायक हैं।

दूसरा योगदायक कारक व्यक्ति का शारीरिक विकास है। उदाहरण के लिए, एक छोटा लड़का अपने कद में छोटा होने के बावजूद अपनी शक्ति को दूसरों के समकक्ष मनवाने हेतु विद्रोही व आक्रामक व्यवहार अपना सकता है। मोटा बच्चा कक्षा में मसखरा होने की जो प्रतिष्ठा उसने अर्जित की है उसे बनाए रखने का प्रयास कर सकता है। बड़ा बच्चा जब कोई शरारत ध्यान में आती है तो अपने गुट के सरदार का कार्य करता है क्योंकि उसे भी अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखना है। उसका बाल समूह उससे कुछ मात्रा में अनुचित व्यवहार की भी अपेक्षा करता है और वह भी उन्हें नीचा नहीं दिखाना चाहता।

### 13.5.3 अध्यापक और कक्षा की परिस्थितियाँ

बालक की कुछ व्यवहारगत समस्याएँ अध्यापक की देन हो सकती हैं। यह मानना असंभव है कि कोई अध्यापक जानबूझ कर अपने छात्र से दुर्व्यवहार की अपेक्षा करता हो, लेकिन बहुत से अध्यापक अनजाने में ऐसा कर गुजरते हैं। जो कटाक्ष प्रिय अध्यापक सदा अपने छात्रों पर व्यंग्यबाण छोड़ते रहते हैं और उन्हें अपमानित करने से नहीं चूकते या कुछ के साथ पक्षपात करते हैं, वे अनजाने में ही विद्यार्थियों का वैरभाव अर्जित कर लेते हैं और पीड़ित छात्र उनसे प्रतिशोध (बदला) लेने की ताक में जुट जाते हैं।

ढुलमुल व्यक्तित्व वाले अध्यापक, जिनकी कोई निर्धारित नीति नहीं होती, विद्यार्थियों के दुर्व्यवहार में योगदान देते हैं। विद्यार्थी यह देखने का प्रयास करते हैं कि अध्यापक अपनी नाराजगी प्रदर्शित करें उससे पूर्व वे क्या व कितना कर सकते हैं? जो अध्यापक आरामतलब या सुस्त है, जो विद्यार्थियों का 'साथी' होने का दम भरता है और जो कक्षा के साथ मिलनसारिता और खूब मजाकिया होने की कोशिश करता है, वह भी विद्यार्थियों की व्यवहार समस्याओं को निमंत्रण देता है।

अध्यापक की अध्यापन प्रणाली और उसका व्यक्तित्व भी छात्रों की व्यवहार समस्याओं को प्रभावित करते हैं। यदि कक्षा में पढ़ाने का कार्य नीरस है, यदि विद्यार्थियों की रुचि व ध्यान को संकेंद्रित नहीं किया जाता, यदि उनके करने के लिए बहुत कम काम है, यानी उन्हें बैठना, सुनना व पढ़ना भर है, यदि पाठ सुनियोजित नहीं है, यदि कक्षा दिनचर्या के कार्य भलीप्रकार आयोजित नहीं किए जाते, यदि हर विद्यार्थी को करने के लिए उपयुक्त कार्य नहीं दिया जाता, यदि अध्यापक चर्चा को फैलाकर हाथ से निकलने देता है और निजी चर्चा में बदल देता है, तो समझ लीजिए कि अध्यापक ही उस प्रकार का वातावरण बनाने में सहायता कर रहा है जिसमें अनुशासन की समस्याओं के पैदा होने व फलने-फूलने की पूरी संभावनाएँ हैं।

दूसरा विचारणीय पहलू कक्षा का भौतिक विस्तार है, यानी विशेष रूप से कमरे का आकार कैसा है? विद्यार्थियों की संख्या कितनी है? और बैठने की व्यवस्था ठीक है या नहीं? आदि। कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या जितनी अधिक होगी, उतने ही इस बात के अवसर कम-से-कम होंगे कि

अध्यापक हर छात्र पर अलग-अलग आवश्यकता के अनुसार ध्यान दे सके। कमरा छोटा हो और उसमें भीड़ अधिक हो तो विद्यार्थियों के दुर्व्यवहार करने के प्रलोभन और अवसर भी उतने ही अधिक होंगे। यदि और कोई कारण नहीं हो तो भी हर छात्र पर और विशेष रूप से समस्याग्रस्त छात्र पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देने व अवलोकन किए जाने की कम संभावना रहती है। कमरे की भीड़-भाड़ भी विद्यार्थियों की शारीरिक परेशानी का कारण बनती है, क्योंकि इससे छात्रों की शारीरिक हलचल प्रतिबंधित हो जाती है।

कक्षा में बने उपसमूह यानी छात्रों की छोटी-छोटी टोलियाँ भी व्यक्तिगत व्यवहार पर पर्याप्त प्रभाव डालती हैं। उदाहरण के लिए, मान लो मोहन और राम की टोली बनी हुई है। इन दोनों को जैसे ही साथ बैठने दिया जाता है, वे अत्यधिक व्यवधान उत्पन्न करने लगते हैं। उनका आपसी प्रभाव उन दोनों में अवांछनीय गुणों को प्रकट करने लगता है। किंतु यदि उनको अलग-अलग कर दिया जाए तो उनकी व्यवहारगत समस्याएँ उत्पन्न ही नहीं होंगी।

### 13.5.4 सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ

बच्चों, किशोरों और युवकों के दुर्व्यवहार में योगदान करने वाले सामाजिक और सांस्कृतिक कारणों में से कुछ दूरदर्शन-कार्यक्रम, चलचित्र, कॉमिक और पत्रिकाएँ हैं, जिनमें उनका हिंसा प्रसंगों, डरावने दृश्यों, परपीड़न, लज्जाहीनता तथा उत्कृष्टता और नैतिकता के सिद्धांतों के अनादर से सामना होता है। हम बलपूर्वक सिद्ध करते हैं कि रमन ऐसा इसलिए करता है क्योंकि वह गलत ढंग का दूरदर्शन कार्यक्रम देखता है। किंतु यह कहना अधिक सही होगा कि रमन को जो सामाजिक, भावात्मक, बौद्धिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि प्राप्त है उसके प्रभावों से भी उसका व्यवहार प्रभावित होता है। दूरदर्शन देखने से तो संभवतः एक परिस्थिति विशेष में वह क्या करता है और कैसे करता है, इस पर ही उसका प्रभाव पड़ सकता है।

किशोरों की व्यवहारगत समस्याओं को प्रायः उनकी तमाम अनुकूल परिस्थितियों के परिणाम के रूप में समझा जा सकता है। भेदभाव, उत्पीड़न एवं जाति, धर्म और राष्ट्रीयता के आधार पर अवसरों की असमानता भी युवकों में दुर्व्यवहार को जन्म देती है।

### 13.5.5 घर की परिस्थितियाँ

विद्यार्थियों के दुर्व्यवहार में विभिन्न प्रकार की असंतोषप्रद घरेलू परिस्थितियाँ भी कारण बनती हैं। विद्यालयी जीवन में संतोषप्रद समायोजन के लिए माता-पिता का प्यार और उनका निर्देशन आवश्यकता है। किंतु जिन बालकों के माता-पिता नहीं होते या किसी एक की मृत्यु हो जाती है या जिनके माता-पिता में तलाक या अलगाव होता है,या दोनों ही कार्य-व्यापार के लिए या सामाजिक कारणों से लंबे समय तक अनुपस्थिति रहते हैं, उनके बच्चों में व्यवहारगत समस्याएँ पैदा हो जाती हैं। तब वे अपने को बहिष्कृत सा या उदास महसूस करते हुए उसकी क्षतिपूर्ति हेतु कई अन्य प्रकार के व्यवहार करने लगते हैं।

घर के वातावरण में जब माता-पिता या दूसरे वयस्क लोग अपने शब्दों या कार्यों से यातायात के नियमों के उल्लंघन की सजा से बचने का प्रदर्शन करते हैं, जब वे एक-दूसरे के साथ निर्लज्जता और असभ्यता का व्यवहार करते हैं, जब वे एक-दूसरे के अधिकारों और गरिमा का आदर करने में विफल होते हैं, जब वे दूसरों के लिए गंदी भाषा का प्रयोग करते हैं, तो ऐसी परिस्थितियों में बालक भी सामाजिक और नैतिक परंपराओं का निरादर करना सीख लेता है।

कुछ विद्यार्थियों पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया जाता या उनकी पूछ नहीं होती, जबकि कुछ को आवश्यकता से अधिक संरक्षण मिलता है। उनकी प्रत्येक इच्छा पूरी की जाती है, और उनको मनमानी करने से भी मना नहीं किया जाता, तो ऐसे विद्यार्थी यह विश्वास करने के अभ्यस्त हो जाते हैं कि शेष संसार का अस्तित्व तो उनकी सेवा करने के लिए ही है। जब ऐसे विद्यार्थियों से ऐसा कार्य करने की अपेक्षा की जाती है जो उनके लिए तत्काल आनन्ददायक नहीं है या समूह की अच्छाई के लिए उन्हें आवश्यक नियमों का पालन करने के लिए कहा जाता है, तब वे यह नहीं जानते कि उन्हें कैसा व्यवहार करना चाहिए। आक्रामक और व्यवहारगत समस्याओं

वाले विद्यार्थी प्रायः ऐसे घरों से आते हैं जिनमें उनके माता-पिता अनुशासन की एकरूपता में संतुलन नहीं बनाए रखते। वे कठोर और अधिक दंड का प्रयोग तो करते हैं पर अपने बच्चों के लिए प्यार और लगाव का व्यवहार नहीं करते।

## 13.5.6 कदाचनिक भूलें

ऊपर जिनका उल्लेख किया जा चुका है, कुछ उदाहरणों में उनमें से कोई भी कारक लागू नहीं होता। दुर्व्यवहार का कारण विद्यार्थियों की नियमों से अनभिज्ञता हो सकती है या हो सकता है कि वे नियमों को भूल गए हों या सोचा हो कि ये नियम उन पर लागू नहीं होते। या यह भी हो सकता है कि वह दुर्व्यवहार क्षणिक उत्तेजना में कर दिया गया हो और वे जानते हों कि उन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया जो उन्हें नहीं करना चाहिए था या करने से पूर्व उन्हें रोक दिया जाता तो वे ऐसा नहीं करते।

**पलायनशीलता**

विद्यालय से पलायन नीचे लिखे दो कारणों में से किसी भी एक कारण से हो सकता है :

1) विद्यार्थी ऐसी असहनीय स्थिति से पलायन कर रहा है जिसमें विद्यालय कार्यक्रम कुछ नहीं बल्कि असफलता, लज्जा, बदनामी और समकक्ष लोगों से उपहास का मूर्तिमान रूप है, या फिर

2) विद्यार्थी कुछ गंभीर भावात्मक संघर्षों से ग्रस्त है। दोनों ही मामलों में पलायनशीलता एक ऐसा लक्षण है जो किसी मनोवैज्ञानिक या उत्तरदायी वयस्क के तत्काल ध्यान की माँग करता है।

**उदाहरण**

सुनील एक उच्च आर्थिक स्तर के समुदाय में रह रहे उच्च मध्यम वर्गीय परिवार के दो छात्रों में से एक था। उसके माता-पिता अच्छे शिक्षित व गंभीर सोच वाले लोग थे। उनके दृढ़ धार्मिक विश्वास भी थे। धार्मिक और नैतिक मर्यादाओं के मामले में पिता माँ की तुलना में ज्यादा कठोर थे। वह बच्चों को निरंतर अत्यधिक कठिन मापदंडों से मापते रहे, जिन तक वे कभी नहीं पहुँचे। दोनों बच्चे प्रतिभाशाली थे किंतु विद्यालय में उनका कार्य अपर्याप्तता की भावना के परिणामस्वरूप कमजोर था। माता-पिता के लिए उनमें क्रोध व नाराजगी की भावना भर गई। कम शैक्षिक उपलब्धियों के कारण सुनील अनुत्तीर्ण हो गया और उसे फिर से उसी कक्षा में जाना पड़ा। संवेदनशील बालक के लिए यह एक गहरा आघात था। उसकी कुंठा व विद्रोह की भावना तीव्र हो गई। उसका मन स्कूल के क्रियाकलापों से हटने लगा। वह भ्रांति की ओर खिंच गया जिससे वह अनमना हो गया तथा उसके विद्यालय कार्य में निरंतर नुकसान होता रहा।

सुनील की पलायनशीलता यदाकदा बीमार होने से शुरू हुई जिससे वह एक बार में एक-दो दिन के लिए विद्यालय नहीं जाता। बाद में उसने स्कूल जाने से बिलकुल ही मना कर दिया। माँ भी कुछ दिन तक सुनील के भगौड़ेपन को बीमारी के बहाने पिता व विद्यालय से छपाती रही। धीरे-धीरे उसने सुनील की परेशानी की गंभीरता को महसूस किया और एक मनोवैज्ञानिक से परामर्श किया।

ऐसे बालकों के अच्छे भावात्मक समायोजन में सहायता के लिए तत्काल और गंभीर ध्यान देने की आवश्यकता है।

**अन्यमनस्क या विनिवर्तित बालक**

रानी कक्षा 6 में थी। अध्यापक के ध्यान में आया कि वह अक्सर चुप रहती है। वह दूसरे विद्यार्थियों से न तो बात करती और उनके साथ न हीं खेलती। विद्यार्थियों ने भी उसकी उपेक्षा करनी शुरू कर दी क्योंकि वह किसी से मेल-जोल बढ़ाती ही नहीं थी। रानी की सहायता करने के लिए अध्यापक ने उसे विशेष कार्य और 'विशेषाधिकार' देने की कोशिश की और दूसरे चुप रहने वाले विद्यार्थी को उसके साथ बैठाया। रानी चुपचाप अपना काम तो करती, किंतु बहुत

धीरे-धीरे उसने रुचि दिखाना शुरू किया। अध्यापक ने सोचा कि उसे इस तरकीब से विशेष सहायता नहीं मिल रही है इसलिए वह उसकी माँ से मिला। अध्यापक ने रानी के मिलनसारिता रहित गुमसुम व्यवहार के बारे में माँ से बातचीत की। दोनों ने महसूस किया कि माता-पिता द्वारा रानी की छोटी बहन पर अधिक ध्यान दिया जा रहा था और रानी को कम आयु में ही काम से लाद दिया गया था।

अध्यापक और माँ ने रानी को अधिक निश्चिन्त और बाल्यवत बनाने की योजना बनाई। उसकी जिम्मेदारियों को कम करके उसे अधिक 'मजे' के काम करने के अवसर दिए। अध्यापक ने रानी को दूसरी लड़कियों के साथ गुड़िया बनाने के काम में लगा दिया। वर्ष की समाप्ति पर रानी यद्यपि 'शर्मीली' थी किंतु उतनी शांत और अकेली वह अब नहीं रही, जितनी शैक्षिक वर्ष के प्रारंभ में थी।

### चोरी

कुछ समस्याग्रस्त बच्चों में चोरी एक सामान्य लक्षण दिखाई पड़ता है। उदाहरण के लिए, अध्यापक को पता लगा कि विद्यार्थी कल्याण-कोष से 500 रुपए गुम हो गए हैं। कुछ दिनों के बाद अध्यापक ने कुछ विद्यार्थियों को बातें करते सुना था कि रोमेश ने अपने दोस्तों को लगातार दो रातें पेप्सी की दावत देने पर रुपए खर्च किए।

अध्यापक सचेत हो गया और निजी तौर पर रोमेश से मिला। झूठ उगलवाने के कुछ प्रयासों के बाद रोमेश चोरी करने की बात स्वीकार कर ली और जो कुछ उसने बताया वह हृदय विदारक था। रोमेश की पृष्ठभूमि के बारे में विस्तृत पूछताछ करने पर अध्यापक को मालूम हुआ कि वह एक औसत आर्थिक पृष्ठभूमि वाले परिवार का बालक है, किंतु उसके मित्र उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तरों के हैं। उस समूह के साथ बराबरी की भावना प्रकट करते हुए उसने रुपए चुराए ताकि वह भी दिखावा कर सके और अपने दोस्तों को दावत दे सके।

अध्यापक ने स्वयं तत्काल घाटे की पूर्ति करने का निश्चय किया और रोमेश को चुराया गया रुपया किश्तों में चुकाने की अनुमति दे दी। तीन सप्ताह में रोमेश ने पूरा कर्जा चुका दिया। अध्यापक ने रोमेश को अपना वादा निभाने के लिए धन्यवाद दिया।

यह उदाहरण दंडात्मक उपायों जैसे विद्यालय से निकालना, बुरा होने के कारण विद्यालय समय के बाद रोकना, किशोर कारागार भेजना और सजा देना, आदि की तुलना में क्षति- पूर्ति के द्वारा सुधारने का अच्छा उपाय समझा जाता है। धन वापसी के बाद यदि उपयुक्त पुरस्कार दिया जाए तो यह बहुत प्रभावशाली नियंत्रक युक्ति होगी। इसमें और दंड में कोई भ्रांति नहीं होनी चाहिए।

### चिंता और भय

चिंता अनुकूल और अननुकूल - दोनों प्रकार के व्यवहार उत्पन्न करती है। चिंता स्थितियों के प्रति अपनी तीव्रता, अवधि और अनुक्रिया के फलस्वरूप अननुकूल व्यवहार में बदल जाती है। जीवन की विभिन्न चुनौतीपूर्ण स्थितियों में जैसे : परीक्षा की तैयारी करते समय चिंता ही एक अनुकूल प्रकार्य बन जाती है।

चिंता जब उच्चारण संबंधी समस्याओं का रूप धारण कर लेती है, जैसे हकलाना, अटकना आदि या अकारण शारीरिक लक्षणों में, जैसे : सिर दर्द, पेट दर्द, अनिद्रा, अतिसंवेदनशीलता आदि रूपों में प्रकट होती है तो इसे अननुकूल व्यवहार कहा जाता है।

#### उदाहरण

सोनल ने 10 वर्ष की आयु में हकलाना शुरू किया। पहले वह अत्यधिक सक्रिय छात्रा थी पर हकलाना शुरू होने से पूर्व ही उसमें इशारे जैसे बार-बार अपने चेहरे को घुमाना, बैचेनी तथा अन्य स्वचालित छोटी-छोटी अनावश्यक क्रियाओं जैसे शारीरिक लक्षण प्रकट होने लग गए थे। उसके माता-पिता इन लक्षणों को देखकर उसकी आलोचना करते, उसे ऐसा न करने के लिए बार-बार आगाह करते और यदाकदा उसके साथ कठोर बर्ताव करने लगते। कुछ समय बाद उसे शब्दों का

उच्चारण करने में कठिनाई महसूस होने लगी। शब्द उसके होठों तक आते किंतु ठीक से व्यक्त नहीं होते।

बच्चों में जब ऐसी स्थितियाँ प्रकट होने लगें तो उन्हें काफी हद तक सुधारा जा सकता है। लेकिन सुधार के प्रयास जितने जल्दी किए जाएँ, अधिक फलदायक होंगे। यदि आरंभ में ही इन दोषों को ठीक नहीं किया गया तो इनकी आदत पड़ जाती है और बाद में इन्हें दूर करने में लंबा समय लगेगा। मनोवैज्ञानिक इस प्रकार की समस्या के मनोवैज्ञानिक कारणों को खोज कर, उसे श्वास लेने व विश्राम करने की अच्छी आदतें सिखा कर विद्यार्थी की सहायता कर सकता है।

**बोध प्रश्न**

**टिप्पणी :** क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

4. निम्न प्रश्नों का संक्षिप्त उत्तर लिखें :

i) पूर्व वर्गीकृत व्यवहारों के अतिरिक्त आपने किशोरों में जिन अन्य व्यवहारों को देखा हो उनका उल्लेख करें ताकि उन्हें भी उपर्युक्त सूची में सम्मिलित किया जा सके।

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

ii) आक्रामक प्रकृति वाले विद्यार्थी अन्यमनस्क कहे जाने वाले विद्यार्थियों की तुलना में अधिक आसानी से पहचाने जा सकते हैं। क्यों?

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

5. स्तम्भ 'अ' में दिए गए कथनों का स्तंभ 'आ' से मिलान करें।

| 'अ' | 'आ' |
|---|---|
| i) उल्टियाँ (वमन) करता है और परीक्षा से पूर्व घबरा जाता है। | (क) अन्यमनस्क |
| ii) कक्षा में जो हो रहा है उसका अनुसरण नहीं करता। | (ख) उपलब्धि चिंता |
| iii) एकाकीपन पसंद करता है और सामूहिक क्रिया-कलापों में हिस्सा लेने से बचता रहता है। | (ग) पलायनवृत्ति/ भगौड़ापन |
| iv) अनेक प्रकार की बार-बार लगने वाली चोटों पर प्रायः ध्यान नहीं देता। | (घ) शारीरिक दोष |
| v) कक्षा में अनुपस्थिति | (ङ) निम्न अवबोध |

6. निम्नलिखित कथन सत्य हैं या असत्य ? स्पष्ट करें :

i) बालक प्रायः नहीं जानते कि अपनी आवश्यकताओं की उचित सामाजिक संतुष्टि कैसे प्राप्त की जाए। (सत्य/असत्य)

ii) देखे गए व्यवहार की नकल करते हुए एक बालक कमरे के फर्श पर अपनी किताबें फेंक देता है। (सत्य/असत्य)

iii) एक धौंस जमाने वाला या बदमिजाज बालक अपनी व्यक्तिगत संतुष्टि के असामाजिक तरीकों से परिचित होता है। (सत्य/असत्य)

iv) एक प्रदर्शन प्रिय बालक प्रायः मान्यता प्राप्त करने और ध्यान खींचने के लिए कोशिश करता है। (सत्य/असत्य)

v) पहली बार चुइंगम चबाते पकड़े गए बालक को सजा दी जानी चाहिए। (सत्य/असत्य)

vi) एक आदरणीय घर के वातावरण में पला बालक प्रसिद्ध एवं अधिकारिक लोगों के प्रति अनादर का भाव प्रदर्शित करता है। (सत्य/असत्य)

7. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर चार या पाँच पंक्तियों में दीजिए :

i) औसत दर्जे से उच्च व निम्न प्रकार के बालकों में व्यवहारगत समस्याएँ अधिक दृष्टिगोचर होती हैं। क्यों?

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

ii) अध्यापक के ऐसे तीन व्यवहारों का उल्लेख कीजिए जो विद्यार्थियों में व्यवहार संबंधी समस्याएँ पैदा कर सकते हैं।

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

iii) क्या एक शिक्षक को विद्यार्थी के प्रेक्षण योग्य व्यवहार के पीछे क्या राज है - इसे जानने की कोशिश करनी चाहिए? हाँ, तो क्यों?

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

iv) अध्यापक को सभी व्यवहारगत समस्याओं का ज्ञान क्यों होना चाहिए?

..........................................................................................

..........................................................................................

## 13.6 व्यवहारगत समस्याओं से निपटने संबंधी सुझाव

### 13.6.1 क्या दंड व्यवहार को सुधारता है?

जब कोई विद्यार्थी जानबूझ कर दूसरे विद्यार्थियों को शारीरिक या मानसिक पीड़ा पहुँचाता है या उन्हें परेशान करता है तब अध्यापक उसे सज़ा देता है। हम आगे बढ़ें इससे पूर्व एक भ्रम का निराकरण कर लेना जरूरी है। तुष्टि पर बंधन लगाने और दंड देने में ठोस गुणात्मक अंतर है। मान लो, कुछ समय के लिए किसी विद्यार्थी की मध्यावकाश में बाहर जाने की सुविधा बंद कर दी जाती है क्योंकि उसने सुरक्षा के नियमों की अवहेलना कर खुद अपने और सहपाठियों के स्वास्थ्य को खतरा पहुँचाया है। स्पष्टतः इस प्रकार के बंधन से उसे कुछ परेशानी होगी। किंतु इस प्रकार की 'सजा' कोड़ा लगाने/ चाबुक मारने, बाल समूह के सामने जानबूझ कर लज्जित करने या जब तक बालक थक न जाए तब तक भारी किताबों को एक हाथ लंबा कर थामे रहने से तो सर्वथा भिन्न है।

**उदाहरण**

कक्षा 6 की शारीरिक शिक्षा वाली अध्यापिका रीटा इस बात के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ थी कि प्रत्येक कक्षा के सभी लड़कों को नियमित पोशाक पहन कर कक्षा में आना चाहिए। एक बुधवार को, परेश लगातार तीसरी बार अपनी नियमित पोशाक पहन कर आना भूल गया। भुलक्कड़ लड़के को ठीक करने के लिए एक उपाय के रूप में अध्यापिका ने उसे लड़की की पोशाक पहन कर पूरी कक्षा के सामने आने को कहा। ऐसा करने पर उसके सहपाठियों ने उसका मजाक उड़ाया और उसे 'जनखा' कहा। लड़का तुरंत फूट-फूट कर रोने लगा। जब तक वह अध्यापिका रही, उसको अपनी नियमित पोशाक हमेशा याद रही।

उल्लिखित मामले में, बच्चे को पुनः दुःखद अनुभव झेलना न पड़े, यही वह डर था जिससे उसके व्यवहार में बदलाव आया। दंड की यह एक सकारात्मक विधि है। अनुसंधान से पता चला है कि दंड से व्यतिक्रमित व्यवहार को कुछ समय के लिए दबाया तो जा सकता है किंतु इससे बुरी आदत कमजोर नहीं पड़ती।

व्यतिक्रमित (खराब) आदत को दूर करने के लिए दंड केवल उस समय प्रभावी होगा जब उसके स्थान पर सही वैकल्पिक व्यवहार अपनाया जाएगा और उसका पुनर्बलन भी किया जाता रहेगा।

अध्यापक प्रायः दंडात्मक नियंत्रण-प्रणाली का उदारतापूर्वक उपयोग करते रहते हैं। वे अपने कार्य का समर्थन यह कह कर करते हैं कि "ऐसा भले ही मनोविज्ञान की पुस्तक में न लिखा हो, फिर भी ऐसा करना बहुत ही प्रभावी होता है।" अध्यापक सामान्यतः यह चाहता है कि व्यतिक्रम/ विचलन न हो या वह औरों में न फैले। अनुसंधान इस सिद्धांत की पुष्टि करते हैं कि सजा की अवधि जितनी लंबी होगी, दंडित अनुक्रिया उतने ही लंबे समय के लिए दब जाएगी।

### 13.6.2 व्यवहार प्रबंधन की क्रियाविधियां/तकनीकें

कक्षा में व्यवहारगत समस्याओं के प्रबंधन में कुछ प्रभावी सिद्ध हुई नियंत्रण की तकनीकें निम्नलिखित हैं :

1) **संकेत** : जैसे होठों पर अंगुली रखना या भौहें चढ़ाकर अध्यापक का सिर हिलाना। ऐसे सभी संकेतों का आशय होता सकता है कि सभी विद्यार्थी चुपचाप पुनः अपने-अपने कार्य में लग जाएँ।

2) हल्ला मचाने वाले बच्चों के **पास जाने** का अभिप्राय उन्हें उचित कक्षा मर्यादा की याद दिलाना है।

3) लड़कियों की **रुचि बढ़ाई जा सकती है,** यदि अध्यापक कहे : "तुम रिपोर्ट बहुत अच्छी लिखती हो।" "क्या मैं इसे देख सकता हूँ कि यह कैसी बन रही है?"

4) एक क्षण के लिए **शोर की उपेक्षा करना** श्री सूद की मनपसंद प्रणाली हो सकती है, यदि वह यह विश्वास करता है कि शोर स्वतः शीघ्र बंद हो जाएगा।

5) **तर्कपूर्ण शक्ति** एक ऐसी प्रणाली है जिसे श्री कपूर प्रयोगशाला स्थिति में प्रयोग में ला सकते हैं। "इन तेजाबों के साथ आदर का व्यवहार करें, अन्यथा तुम किसी को आसानी से बुरी तरह जला सकते हो।" इस प्रकार का कथन सुस्पष्ट रूप से रसायनों के दुरुपयोग को कम कर सकता है।

6) आदेश देते समय **कथन की स्पष्टता** से आदेश का सही परिणाम होता है। उदाहरण के लिए, "जॉन, डेस्क पर थपकियाँ देना बंद करो और गणित के प्रश्नों पर ध्यान दो।"

7) एक **मजबूत नियंत्रण तकनीक का प्रयोग करना :** "मैं जो कहता हूँ वह करके दिखाता हूँ।" एक गंभीर व्यावसायिक स्वर, बदमाशी करने वाले बच्चे के पास घूमना या उसे निरंतर देखना जब तक वह बदमाशी बंद न कर दे, ये सभी अध्यापक के नियंत्रण प्रयासों को दृढ़ता प्रदान करते हैं।

8) शोर से निपटने के लिए एक **कार्य-केंद्रित तकनीक है :** "मैं इस कमरे की पिछली सीटों पर शोर की आवाज सुन रहा हूँ। यदि यह शोर जारी रहा तो हम वर्ग-मूल निकालना कभी पूरा नहीं सीख पाएंगे।"

9) **'अपना तकनीकों का भंडार समृद्ध करो' प्रणाली :** दुर्व्यवहार नियंत्रण का एक हिस्सा है - सही समय पर सही तकनीक का उपयोग करना, क्योंकि विद्यार्थी भी अलग–अलग किस्मों में व्यक्ति हैं और अलग-अलग तरीकों से प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

10) **अपनी कक्षा के नेताओं को अच्छी तरह जानो** - प्रत्येक विद्यार्थी को भली प्रकार जान लेने से अनुशासन की समस्या घटनी चाहिए। विद्यार्थी के अच्छे व्यवहार को आप पुरस्कृत करें, इससे पहले यह जानना जरूरी है कि कौन सी चीजें एक विद्यार्थी को प्रबलित करती हैं।

11) **विषय को जितना अधिक रुचिकर** बनाया जाएगा, अध्यापक का नियंत्रण प्रयास उतना ही प्रभावी होगा।

12) विद्यार्थियों की अच्छाइयों का और उनकी सफलताओं का उनके और अन्य साथियों के सामने गुणगान करें तो विद्यार्थियों को इससे **प्रोत्साहन मिलेगा।**

13) जब एक कम ध्यान देने वाला विद्यार्थी अपने किसी काम को सही ढंग से करता है तो उस पर अपनी स्पष्ट **सकारात्मक टिप्पणी** करें। उसको बताएँ कि वह रचनात्मक कार्य कर रहा है। उसकी और उसके अच्छे काम की प्रशंसा करें।

14) **समय पर दुर्व्यवहार रोकना :** दुर्व्यवहार को रोकने के लिए स्थिति हाथ से निकलने तक प्रतीक्षा न करें। तुम्हारे क्रोधित होकर नियंत्रण खो देने से पहले ही या पूरी कक्षा के उस मार्ग पर चलने से पहले ही दुर्व्यवहार पर नियंत्रण कर लेना जरूरी है।

15) **सीमाएँ स्थापित करो और सामंजस्य बनाए रखो** : यह एक आधारभूत नियम है जिसे अपनाया जाना चाहिए। ऐसा करने वाला उचित और अनुचित के भेद को जानता है। उसे यह जानने की आवश्यकता है कि उसके व्यवहार के क्या परिणाम होंगे? न्यायसंगत परिणामों के अनुसरण में सामंजस्य पूर्ण रहो। धमकियाँ और रिश्वतें कार्य नहीं करती है।

ये कुछ ऐसे कर्म हैं जिनसे, विद्यार्थियों के साथ बर्ताव करते समय, बचना चाहिए। ये कर्म अनुपयुक्त पाए गए हैं। अतः एक व्यवहारगत समस्या वाले विद्यार्थी की सहायता करने के लिए निम्नलिखित बातों को सम्मिलित न करो :

1) पशुबल का प्रयोग करना "तुमने मुझे चोट पहुँचाई अतः मैं भी तुमको चोट पहुँचाऊगा।"

2) विद्यार्थी के दुर्व्यवहार के लिए उसे दोष देना। "एक अर्थ में आप विद्यार्थी को अपना चेहरा बचाने के लिए झूठ बोलने हेतु मजबूर कर रहे हैं।"

3) विद्यार्थी के व्यवहार की उसके सहपाठियों से या भाई-बहन से तुलना करना।

4) तर्क देना - विद्यार्थी के साथ तर्क में तुम नहीं जीत सकते। ऐसा करोगे तो प्रायः तुम दोनों का ही नुकसान होगा।

5) विद्यार्थी को बड़ों या उसके मित्रों के सामने लज्जित करना।

6) विद्यार्थी को ऐसे कार्यों से दूर करना, जिन्हें वह अच्छा करता है और उनको करने में आनंद लेता है।

7) विद्यार्थी की गलतियों या दुर्व्यवहार के लिए उसकी हंसी उड़ाना।

8) जब तक आपको पक्का विश्वास न हो, विद्यार्थी को किसी विशेष उपाधि (लेबल) से 'अलंकृत' न करें।

ऊपर बताए गए अधिकांश सुझाव व मार्ग-निर्देश सामान्य किस्म के हैं जिन्हें बड़ी आसानी से सामान्य विवेक के साथ लागू किया जा सकता है।

जैसा यहाँ सुझाया गया है, इन समस्याओं और विकल्पों के बारे में अग्रिम रूप से विचार करना माता-पिता / अध्यापकों और व्यवहारगत समस्याओं वाले विद्यार्थियों – सभी के लिए सुविधाजनक होगा।

### 13.6.3 व्यवहार-परिष्करण (Modification) की तकनीक

यह तकनीक उन शिक्षकों और माता-पिता के लिए सहायक है जो बच्चों के साथ अधिक प्रभावी तरीके से जुड़ना चाहते हैं और जो बच्चों को शारीरिक और मानसिक दृष्टि से बहुत स्वस्थ तरीके से विकसित होने में सहायता करना चाहते हैं।

**पुनर्बलन** : पुनर्बलन एक ऐसा परिणाम आधारित व्यवहार है, जो भविष्य में व्यवहार का सम्यक् रूप से अनुसरण करना सिखाता है। कोई भी बालक, जब यह जान लेता है कि जब वह अच्छा कार्य करता है तब माँ / अध्यापक उसके प्रयत्नों को महत्व देते हैं, तब वह बालक अपने कार्य को साफ-सुथरे ढंग से करेगा।

**दंड** : दंड एक ऐसा परिणाम आधारित व्यवहार है जो भविष्य में व्यवहार के घटित होने को कम करने के लिए अपनाया जाता है। उदाहरण, जब कोई बालक अपनी बहिन को पीटता हो तो ऐसा करते समय हर बार उसे कुर्सी पर बैठने के लिए कह दिया जाए।

**लोप** : किसी व्यवहार को कम करने के लिए उस व्यवहार पर प्रतिक्रिया न करना लोप कहलाता है।

**उदाहरण** - एक बालक रूठता है और उसकी माँ उसकी अनदेखी कर देती है तो भविष्य में वह रूठना बंद कर देगा।

**गढ़ना** : अपेक्षित व्यवहार के नजदीकी व्यवहार का पुनर्बलन ही गढ़ना है।

**उदाहरण** - अपने अत्यधिक निर्भर बालक को अधिक स्वावलंबी बनाने में माता की सहायता करने वाली प्रक्रिया। यह प्रक्रिया छोटे व प्रारंभिक प्रयासों से शुरू करनी चाहिए और हर प्रयत्न को पुरस्कृत किया जाना चाहिए। प्रत्येक चरण कुछ समय लेता है जो कि बालक की तत्परता पर निर्भर करता है। इसलिए धैर्य महत्वपूर्ण है। बालक जैसे-जैसे चरण वार प्रगति करता जाता है, वैसे-वैसे ही पूर्व चरण का पुनर्बलन बंद कर देना चाहिए।

**संगति :** एक चयनित मार्ग का निरंतर अनुसरण करना संगति कहलाता है।

**उदाहरण -** बिस्तर पर सुला देने के बाद हर बार जब बालक बिस्तर से बाहर निकलना चाहे तो माता-पिता को चाहिए कि वे हर बार बालक को तत्काल पुनः बिस्तर पर सुला दें।

**अवलोकन :** अवलोकन का अर्थ है व्यवहार को एक निश्चित समय तक देखते रहना, ताकि व्यवहार के घटित होने की बारंबारता का पता लग सके।

**उदाहरण :** मान लो, एक बालिका अत्यधिक क्रियाशील है और अपनी सहेलियों की एकाग्रता बारबार भंग कर देती है। तब अध्यापिका देखती है और इस बात का रिकार्ड रखती है कि उस बालिका ने कितनी बार झल्लाहट का स्वभाव प्रदर्शित किया।

**अभिलेखन :** कोई व्यवहार कितनी बार घटित हुआ, इसका लेखा-जोखा रखना ही अभिलेखन है।

विद्यार्थी का नाम :...............................................................................

दिनांक :...............................................................................

1 मिनट          2 मिनट

...............................................................................

3 मिनट          4 मिनट

...............................................................................

5 मिनट          6 मिनट

...............................................................................

7 मिनट          8 मिनट

...............................................................................

**चित्र 13.1 : कोई व्यवहार कितनी बार घटित हुआ, इसका सुव्यवस्थित अभिलेख (रिकार्ड) रखने के लिए चार्ट का नमूना**

**परिणाम (Consequence) :** परिणाम वह घटना है जो किसी व्यवहार के घटित होने के बाद होती है।

**उदाहरण -** एक बालक अपना गृह-कार्य पूरा कर लेता है, तब उसे पुरस्कार स्वरूप उसकी रुचि का दूरदर्शन-कार्यक्रम देखने की स्वीकृति दी जाती है। इसे ही परिणाम मानना चाहिए।

**आधार रेखा (Base line) :** अंतःक्षेप (Intervention) से पूर्व किसी व्यवहार के घटित होने की बारंबारता आधार रेखा कहलाती है।

**उदाहरण -** किसी व्यवहार को बदलने के लिए किए गए प्रयत्नों से पूर्व अवलोकनकर्ता जब अनुपयुक्त व्यवहार की बारंबारता का लेखा जोखा रखता है।

**परिचालन/कार्यसाधन (Manipulation) :** किसी व्यवहार को बदलने के लिए अंतःक्षेप की तकनीक परिचालन या कार्यसाधन कहलाती है।

**उदाहरण** - कोई लड़का अपनी किताबें इधर-उधर फेंक देता है। फेंकने के इस व्यवहार को कम करने के लिए जितनी बार वह किताब फेंकता है उतनी ही बार उसे कुर्सी पर बिठाया जाता है।

**बोध प्रश्न**

**टिप्पणी :** क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

8. निम्न प्रश्नों का संक्षिप्त उत्तर लिखें :

i) व्यवहारगत समस्याओं से निपटने के लिए कोई एक सर्वोत्तम तरीका क्यों नहीं हो सकता?

..................................................................................................

..................................................................................................

..................................................................................................

..................................................................................................

ii) दंड का प्रयोग कम-से-कम क्यों करना चाहिए?

..................................................................................................

..................................................................................................

..................................................................................................

..................................................................................................

## 13.7 उपचारात्मक उपाय

व्यवहारगत समस्याओं के प्रबंधन हेतु अध्यापक, माता-पिता और परामर्शदाता निम्नलिखित उपाय प्रयोग में ला सकते हैं :

### 13.7.1 अध्यापकों की भूमिका

अध्यापक को केवल शैक्षिक उपलब्धि पर ही नहीं, विद्यार्थी के समग्र विकास पर ध्यान देना चाहिए। वह इस अच्छी स्थिति में होता है कि स्वस्थ व्यक्तित्व के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सके। उसे इसके पर्याप्त अवसर भी मिलते हैं और ऐसा करना उसका दायित्व भी बनता है। अध्यापक मानव-व्यवहार को समझने में प्रशिक्षित होता है, और वह किसी भी बालक के अवलोकन और उसकी कक्षा के साथियों से तुलना करने के लिए अच्छी स्थिति में होता है, ताकि वह व्यवहारगत समस्याओं वाले विद्यार्थियों को पहचान सके। व्यवहारगत समस्याओं वाले अधिकतर विद्यार्थी मध्यम से सामान्य समस्याओं वाले होते हैं, जिनका प्रभावी उपचार घर और नियमित कक्षा में बड़ी आसानी से किया जा सकता है। हाँ, यदि विद्यार्थी की समस्याएँ गंभीर प्रकृति वाली हों तो फिर उनका उपचार किसी मनोवैज्ञानिक द्वारा किया जाना चाहिए।

ऐसे समस्याग्रस्त विद्यार्थियों के प्रति शिक्षक को प्रभावी और सृजनशील होना चाहिए। उसे चाहिए कि इन विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप वह पाठ्यचर्या-सामग्री को ढाल ले। स्वयं के प्रति गलत धारणा रखने वाले विद्यार्थी की सहायता के लिए अध्यापक सुरक्षित

मनोवैज्ञानिक वातावरण सृजित कर सकता है, जिसमें विद्यार्थी अस्वीकार कर दिए जाने के भय के बिना अपने आपको अभिव्यक्त कर सके। अध्यापक या किसी भी वयस्क व्यक्ति को चाहिए कि वह बिना किसी शर्त के सकारात्मक रुख अपनाते हुए समस्याग्रस्त विद्यार्थियों को इस बात के लिए प्रोत्साहित करता रहे कि उन्हें अपनी सकारात्मक और नकारात्मक भावनाओं को स्वतंत्रतापूर्वक खोजते रहना चाहिए।

रोजर्स के अनुसार, यदि हम विद्यालय और घर में ऐसा वातावरण तैयार कर दें जिसमें विद्यार्थी को निरंतर प्रेम व आदर मिले तो अधिकांश व्यवहारगत समस्याएँ दूर की जा सकती हैं। व्यक्ति दूसरों के सद्भाव और सकारात्मक सम्मान का मूल्य समझेगा और उसे प्राप्त करने की कोशिश करेगा।

बहरहाल, शिक्षक का मुख्य कार्य व्यवहारगत समस्याओं वाले विद्यार्थियों को सुधरे हुए सामाजिक कौशल सिखाना है। उसे चाहिए कि वह कुसमायोजित व्यवहारों के स्थान पर सामाजिक दृष्टि से उपयुक्त व्यवहारों को सीखने में विद्यार्थियों की सहायता करें। यह प्रायः कठिन किंतु आवश्यक कार्य है, विशेषतौर पर तब जब विद्यार्थी के व्यवहार को प्रभावित करने वाले सभी कारकों को अध्यापक नहीं जानता, और जानता भी है तो केवल कुछ ही कारकों को। सबसे बड़ी बात तो यह है कि छात्र के समस्याग्रस्त व्यवहार के जनक कई कारक ऐसे होते हैं जिनपर अध्यापक अपना नियंत्रण रख ही नहीं पाता। (उदाहरण के लिए, अपराधी मित्र मंडली पर, जिसके साथ विद्यार्थी विद्यालय समय के बाद घूमता-फिरता रहता है।) इन सीमाओं के बावजूद विद्यार्थी के अतीत (जिसे कोई नहीं बदल सकता) पर रोने से कोई लाभ नहीं। समस्याग्रस्त विद्यार्थी को कक्षा में सहायता करने में विफल रहने के बहाने विद्यार्थी के वातावरण की सभी वस्तुओं (नहीं बदलने वाली) को खराब घोषित करते रहना भी ठीक नहीं होगा।

समस्याग्रस्त विद्यार्थी को डराने-धमकाने की बजाय अध्यापक को चाहिए कि वह उसके लिए तार्किक, वास्तविक और सहज परिणाम देने वाले कार्यकलाप चुने और उन्हें उनसे पूरा करवाए। परिणाम स्थितियों के अनुरूप हों। उदाहरण के लिए, 'मैं तुम्हारे हाथ तोड़ दूँगा, यदि चोरी करते पकड़े गए' यदि वह दुबारा चोरी करता है तो तुम्हारे पास विकल्प क्या है?

## 13.7.2 माता पिता/अभिभावकों की भूमिका

किशोर विद्यार्थी सामाजीकरण, रक्षा और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मुख्यतः अपने माता-पिता/ अभिभावकों पर निर्भर रहते हैं। योग्य माता-पिता योग्य संतान तैयार कर सकते हैं, और अयोग्य माता-पिता अपने बच्चों को स्थायी रूप से अयोग्य बना सकते हैं। उपयुक्त पारिवारिक व्यवहारों के महत्व के बावजूद ऐसे कौशल है जो केवल अनौपचारिक रूप से अधिकांशतः परिवारों में उदाहरणों द्वारा सिखाए जा सकते हैं।

माता-पिता को अपने बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए ताकि वे समस्याग्रस्त न हो सकें, यदि इनसे संबंधित सैद्धांतिक बातें अभिभावकों को बता दी जाएँ तो शायद माता-पिता द्वारा बच्चों के साथ होने वाले दुर्व्यवहार की रोकथाम में सहायता मिल सकती है। इस तरीके से बाल-विकास को पूरा बढ़ावा मिल सकता है। अधिकतर माता-पिता अपने बच्चों में कष्टदायक व्यवहारगत समस्याएँ विकसित हो जाने के बाद ही अध्यापकों से सलाह लेने का प्रयत्न करते हैं कि उन्हें कैसे ठीक किया जाए। अच्छा तो यह होगा कि उन्हें पहले ही बता दिया जाए कि समस्याएँ पैदा ही न हों, इसके लिए क्या-क्या किया जाना चाहिए।

बच्चों की व्यवहारगत समस्याओं की रोकथाम व उपचार के नए निर्देशों में माता-पिता को दिया जाने वाला प्रशिक्षण और बच्चों के लिए स्व-नियंत्रण प्रशिक्षण सम्मिलित है। माता पिता के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम लोकप्रिय हुए हें और ये कार्यक्रम माता-पिता और बालक के बीच की अंतःक्रियाओं को बदलने में भी प्रभावी सिद्ध हुए हैं। इन कार्यक्रमों का पूरे परिवार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

आवेगी, आक्रमणशील और अवज्ञाकारी (आज्ञा न मानने वाले) विद्यार्थियों के लिए स्व-नियामक कार्यक्रम भी खोज लिए गए हैं। उदाहरण के लिए, जब अध्यापक माता पिता को विद्यार्थी के

विद्यालय से अनुपस्थित रहने, चोरी करने या हिंसक होने के बारे में कहता है तो बहुधा माता-पिता इसे स्वीकारने में कठिनाई अनुभव करते हैं। व्यवहार को अस्वीकार करने से केवल समस्या बढ़ती ही है। इसके बजाय माता-पिता को यह समझने का प्रयास करना चाहिए कि उसने चोरी क्यों की और बालक को समझाना चाहिए कि यह एक गलत व्यवहार है, या फिर समझाने के लिए किसी व्यावसायिक व्यक्ति की सहायता लेनी चाहिए।

**पितृ-प्रबंधन प्रशिक्षण**

अपने बच्चों के साथ माता-पिता की अधिक प्रभावी अंतःक्रिया हो, इस हेतु तथा विभिन्न व्यवहार संबंधी सिद्धांतों (जैसे पुनर्बलन, लोप और दंड) को प्रयोग में लेने के लिए माता-पिता को प्रशिक्षण देना आवश्यक है ताकि बच्चों में समाज के अनुकूल व्यवहार करने को बढ़ावा दिया जा सके। ऐसा प्रशिक्षण माता-पिता को प्रत्यक्ष रूप से सकारात्मक प्रतिमान सिखाने पर बल देता है, माता-पिता और बालक के बीच के प्रपीड़क (Coercive) आदान–प्रदान को कम करता है और व्यवस्थित पुनर्बलन द्वारा समाज के पक्ष में व्यवहार को बढ़ाता है। इस प्रशिक्षण विधि की प्रभाविता परिवार के प्रकार, उपचार की मात्रा / तीव्रता (जैसे अवधि, घर में निरीक्षण) और कई अन्य पारिवारिक कारकों जैसे (माता पिता के बीच कलह या किसी मनोरोग आदि) पर निर्भर करता है। हाँ, यदि परिवार पूरी तरह से निष्क्रिय बना रहता है तो फिर प्रशिक्षण का कोई असर नहीं होगा।

## 13.7.3 उपबोधक/मनोवैज्ञानिक की भूमिका

उपबोधक के दो प्राथमिक दायित्व हैं। प्रथम, वह सुनिश्चित कर ले कि बालक को और नुकसान नहीं होने देगा और दूसरा, बालक के वर्तमान वातावरण का ऐसा कुशल प्रयोग करे कि वर्तमान और भूत की नहीं बदले जाने वाली परिस्थितियों के बावजूद, आगे उपयुक्त वातावरण विकसित किया जा सके। बल वर्तमान और भविष्य पर रहे, न कि भूतकाल पर। साथ ही विद्यालय तथा घर के वातावरण को सुधारने या बच्चे के लाभ के लिए सामुदायिक संसाधनों का उपयोग करने पर बल दिया जाए।

उपबोधक को जब सहायता के लिए निवेदन किया जाता है तब वह पहले बच्चे की समस्या का प्रत्यक्ष मूल्यांकन करने के लिए अध्यापक / माता-पिता से बातचीत करेगा। बालक की समस्या की विस्तृत तस्वीर उभर आने और उसे समझ लेने के बाद वह निर्णय करेगा कि बालक की समस्या विशेष को माता-पिता निपटाएंगे या अध्यापक या वह स्वयं।

यदि उपबोधक अनुभव करता है कि समस्या बहुत ही गंभीर है तो वह उसके अध्ययन के लिए कई निदानात्मक विधियों (जैसे : मनोवैज्ञानिक परीक्षण, साक्षात्कार, बालक का प्रेक्षण आदि) का प्रयोग करता है। कुछ मामलों में शारीरिक जाँच द्वारा या माता पिता से परामर्श कर बालक के शारीरिक स्वास्थ्य के बारे में भी जान लेना चाहिए।

विस्तृत अध्ययन के बाद निकले परिणामों के बारे में बालक के माता-पिता के साथ चर्चा की जाएगी और उसकी सहायता करने के लिए जो भी सुझाव आवश्यक होंगे वे उन्हें दिए जाएँगे। बालक का उपचार कराने का सुझाव हो सकता है, साथ-साथ माता-पिता (अकेले या दोनों) को तब क्या करना होगा, यह भी बताया जाना चाहिए। जैसे बालक को सहायता की आवश्यकता होती है उसी तरह से माता-पिता को भी समझाया जाना चाहिए कि वे घर पर बालक के साथ कैसे काम करें। उपबोधक हमेशा बच्चे के अध्यापक के साथ भी सहायक तरीकों के बारे में चर्चा करता है। बालक की सहायता से संबंधित योजना के कार्यान्वित हो जाने के बाद वह माता पिता और शिक्षक के साथ लगातार संपर्क बनाए रखता है ताकि यह पता लगाया जा सके कि योजनाबद्ध व्यूह-रचना बच्चे पर सफलतापूर्वक कार्य कर रही है या नहीं या इसको बदलने की आवश्यकता है।

उपबोधक बच्चों की सामान्य कठिनाइयों को साधारण तरीके से समझाने के लिए अध्यापकों के समूह को संबोधित कर सकता है और उन विधियों की चर्चा कर सकता है जिनके द्वारा ऐसे बच्चों के संपर्क में आने वाले अध्यापक उनकी सहायता कर सकें या किसी कार्यक्रम की योजना

बना सकें। उपबोधक अध्यापक-अभिभावक संघ (पी.टी.ए.) की बैठक के दौरान या अलग से अभिभावकों की बैठक का आयोजन कर स्कूल की सहायता कर सकता है।

**बोध प्रश्न**

**टिप्पणी :** क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

9. नीचे दिए गए कथनों पर सत्य / असत्य के रूप में सही (√) निशान लगाएँ।

i) विद्यार्थियों की व्यवहारगत समस्याओं को पहचानने में अध्यापक अच्छी स्थिति में होता है। (सत्य/असत्य)

ii) हल्की व मध्यम दर्ज़े की समस्याएँ माता-पिता/ अभिभावक और अध्यापकों द्वारा प्रभावी ढंग से हल की जा सकती हैं। (सत्य/असत्य)

iii) स्थिति का उपचार करने की कोशिश के बजाय बालक के लिए दंडात्मक उपाय अधिक कारगर होता है। (सत्य/असत्य)

iv) बालकों की सभी प्रकार की समस्याओं के निवारण में माता-पिता/ अभिभावक और अध्यापक सहायता कर सकते हैं। (सत्य/असत्य)

v) समस्या पर कार्य शुरू करे, इससे पहले परामर्शदाता को चाहिए कि वह बालक की समस्याओं का निर्धारण कर लें यानी उन्हें भली भांति पहचान लें। (सत्य/असत्य)

vi) बालकों की व्यवहारगत समस्याओं को समझने व उनका हल करने के लिए उपबोधक को माता-पिता / अभिभावक और शिक्षक की सहायता की आवश्यकता नहीं होती। (सत्य/असत्य)

10. नीचे दिए गए प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें :

i) व्यवहारगत समस्याओं को सुधारने या सही करने के लिए अध्यापक / माता-पिता द्वारा प्रयोग में ली जा सकने वाली कुछ सकारात्मक प्रणालियों का उल्लेख करें।

.......................................................................................

.......................................................................................

.......................................................................................

.......................................................................................

.......................................................................................

ii) माता-पिता अपने बच्चों की व्यवहारगत समस्याओं का सामना करने में उनकी सहायता कैसे कर सकते हैं?

.......................................................................................

.......................................................................................

.......................................................................................

.......................................................................................

.......................................................................................

iii) उपबोधक को बालक की व्यवहारगत समस्या का पहले निर्धारण कर लेने की आवश्यकता क्यों पड़ती है?

..............................................................................................

..............................................................................................

..............................................................................................

..............................................................................................

## 13.8 सारांश

व्यवहारगत समस्याओं का प्रभावशाली हल ढूँढ़ने के लिए पहले अध्यापक को उन व्यवहारगत समस्याओं के कारणों को समझ लेना चाहिए। इनमें से कुछ कारण हैं - व्यक्तिगत और सामाजिक आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए प्रयास, अध्यापक और कक्षा-परिस्थितियाँ तथा घरेलू, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ। बालकों की व्यवहारगत समस्याओं का हल निकालने के लिए कई सुझाव दिए गए हैं। व्यवहारगत समस्याओं को सुधारने के लिए अध्यापकों और माता-पिता को चाहिए कि वे दंडात्मक विधियों के बजाय सकारात्मक विधियों का प्रयोग करें। केवल अनिवार्य परिस्थितियों में ही दंड प्रभावशाली हो सकता है। किस प्रकार के सुधारात्मक उपाय लागू किए जाए - इसका निश्चय करने के लिए अध्यापक और माता-पिता को बालक के मानसिक स्वास्थ्य और चरित्र-निर्माण, दूसरे बच्चों की नैतिकता व दृष्टिकोणों आदि पर पड़ने वाले प्रभावों का लेखा जोखा रखना चाहिए। सुधारात्मक उपाय भी विद्यार्थी विशेष की आवश्यकता से मेल खाने वाले हों।

व्यवहारगत समस्याओं वाले बच्चों को समझने एवं विचार करने के लिए अध्यापक और माता-पिता की सहायता की आवश्यकता है ताकि उनकी कठिनाइयाँ कम की जा सकें और वे अपनी शैक्षिक समस्याओं का अच्छे ढंग से मुकाबला कर सकें तथा अपने निजी जीवन को सुधार सकें। उन्हें बालक में या वातावरण में व्यवहारगत समस्याओं के कारणों की पहचान करने की कोशिश करना चाहिए। इसके लिए उन्हें बालक के अच्छे व सकारात्मक पक्षों का मूल्य समझने की आवश्यकता है और उनकी व्यवहारगत समस्याओं के स्थान पर सामाजिक दृष्टि से अधिक उपयुक्त सामाजिक अनुक्रियाओं को बदलने में सहायता करना चाहिए।

## 13.9 अभ्यास कार्य

1. समुदाय के उन अभिकरणों के बारे में रिपोर्ट तैयार करें जहाँ गंभीर व्यवहारगत समस्याओं वाले किशोरों को भेजा जा सकता है। वहाँ उपलब्ध सेवाओं और उन्हें वहाँ भेजने की क्रिया-विधि का वर्णन करें।

2. अपने पड़ोस के किसी विद्यालय में जाकर वहाँ व्यवहारगत समस्याओं वाले कुछ किशोरों को पहचाने और उनकी समस्याओं के कारणों का पता लगाएँ।